# तृतीय अध्याय -

## मैत्रेयी पुष्पा के ' चिन्हार ' और ' ललमनियाँ ' कहानी संग्रहों के परिवेश का अनुशीलन -

# तृतीय अध्याय
# मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों के परिवेश का अनुशीलन

## 3.1 परिवेश का स्वरूप

कहानी के मूलतत्व के रूप में देशकाल अथवा वातावरण को मान्य किया जाता है। हर कहानी को घटित होने के लिए समय तथा स्थान आवश्यक होता है। कहानी को सजीव, स्वाभाविक एवं वास्तविक बनाने के लिए कहानीकार को देशकाल का खयाल रखना पडता है। वातावरण कहानी को सौंदर्य गरिमा प्रदान कर प्रभावशाली बनाता है। नाटक में जो स्थान रंगमंच का होता है, कहानी में वही स्थान परिवेश का होता है। कहानी का परिवेश स्वाभाविक आकर्षक और पात्रों की मानसिक स्थिति के अनुकूल होना चाहिए। वातावरण के स्वरूप के अंतर्गत, देशकाल का स्वरूपात्मक विकास, देशकाल और स्थानीय रंग, देशकाल और आंचलिक चित्रण, देशकाल और लोकतत्व आदि का समावेश रचना को परिपूर्णता प्रदान करता है। राहुल भारद्वाज कहानी में परिवेश के बारे में बताते हैं, '' स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय परिवेश में बड़ा तेजी से विकास हुआ। अनेक विकास योजनाओं ने जहाँ मनुष्य के विकास के द्वार खोले वहाँ उसे अनेक विकृतियों का उपहार भी दिया। मनुष्य एकदम महत्वाकांक्षी हो उठा, जिसकी पूर्ति के अभाव में अनेक कुण्ठाओं ने उसे त्रास देना शुरू किया। मूल्यों में विघटन से चारित्रिक पतन के नंगे परिदृश्य सामने आये। स्त्री और पुरुष दोनों ही स्वच्छन्द यौनाचार में लिप्त होते गये। बदलते परिवेश ने व्यक्ति सम्बन्धों को एक नया रूप दिया। बदलते हुए पारिवारिक, सामाजिक, वातावरण में जो सम्बन्ध विकसित हुए उनमें अनेक प्रकार की घुटन, कुण्ठाएँ एवं संत्रास का हलाहल मिला हुआ था।''[1]

### 3.2 परिवेश के गुण

सामान्य रूप में कहानी के परिवेश में वास्तविकता, चित्रात्मकता, वर्णन की सूक्ष्मता आदि गुणों का समावेश रचना को प्रभावपूर्ण और विश्वसनीय बनाता है।

### 3.3 परिवेश के भेद

कहानी के प्रसंगानुसार प्राकृतिक वातावरण का आंशिक अथवा पूर्णात्मक रूप में समावेश किया जाता है। कहानी की कथावस्तु का सम्बन्ध किसी अतीत युग से होता है, तो उसमें ऐतिहासिक वातावरण का चित्रण किया जाता है। इसीके साथ सांस्कृतिक वातावरण का भी उल्लेख किया जाता है, जो कहानियों में चित्रित होता है। परिवेश के अनुसार कहानी के भेद इस प्रकार हैं - ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, ग्राम्य, धार्मिक, राजनीतिक, भौगोलिक, जादुई, तिलिस्मी, जासूसी तथा प्राकृतिक आदि भेदों का समावेश है। अत: डॉ. हेतु भारद्वाज परिवेश के बारे में बताते हैं कि, ''निश्चय ही रचना के मूल में रचनाकार की अनुभूति रहती है किन्तु परिवेश के साथ गहरी एवं आत्मीय सम्बध्दता उसकी रचना को ईमानदार और प्रामाणिक बनाती है। परिवेश की जानकारी रचना को आधार देती है। प्रेमचन्द का कथा-साहित्य सहज तथा प्रभावशाली इसलिए है कि वे अपने पात्रों और पात्रों के परिवेश को अच्छी तरह से जानते हैं।''[2]

### 3.4 परिवेश का महत्व

कहानी में परिवेश के चित्रण का महत्व निर्विवाद है। कहानी में देशकाल का चित्रण हो तो उसकी पृष्ठभूमि सुनियोजित हो जाती है। कल्पना के आधार पर कहानीकार कहानी को प्रभावशाली वातावरण से युक्त बनाकर यथार्थ रूप दे सकते हैं। साथ ही स्थानीय रंग लोकतत्व तथा प्रादेशिक विशेषताओं से युक्त प्रभाव से परिवेश सक्षम बनाया जा सकता है। कहानी के परिवेश का महत्व बताते हुए परमानन्द श्रीवास्तव कहते हैं, ''कहानीकार का परिवेश, जिसकी आत्मा मानवीय संवेदना है (और जिसे दूसरे शब्दों में कहानीकार की दृष्टि

भी कह सकते हैं ) जीवन के शाब्दिक प्रतिबिम्ब के माध्यम से प्रस्तुत होता है। स्थूल रूप से वह सामाजिक परिवेश का प्रतिरूप लग सकता है किन्तु वह ऐसे परिवेश से एकदम भिन्न होता है और अपनी इसी भिन्नता के कारण तो वह प्रभावित भी करता है।''[3] अत: कहानी ने परिवेश के महत्व को उचित स्थान प्राप्त हुआ है। यहाँ हम मैत्रेयी पुष्पा के आलोच्च कहानियों में चित्रित परिवेश को देखेंगे -

## 3.5 मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों का परिवेश

आधुनिक काल की महिला कहानीकार के रूप में पहचानी जानेवाली मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ मानवीय धरातल पर यथार्थ रूप में प्रस्तुत हुई है अपने अनुभवों को शब्दरूप देती हुई कहानियाँ मानवीय रिश्तों की नयी पहचान करा देती हैं। लेखिका ने अपने आस-पास के वातावरण, अपने परिवेश को अपने साहित्य में अंकित किया है। आस पास की परिस्थितियों से प्रेरणा लेकर मैत्रेयी पुष्पा प्रभावित होकर उन घटनाओं को अंकित करती है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में नारी शिक्षा, नारी चेतना और नारी के बदलते परिवेश के कारण प्राचीन सामाजिक संरचना में बडे गहरे परिवर्तन दिखायी देते हैं। नारी शिक्षा, नारी चेतना और नारी द्वारा अन्याय - अत्याचार को विरोध करनेवाला परिवेश मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में उजागर होता है। पारिवारिक सम्बन्धों में निरन्तर गिरावट, खोखले सम्बन्ध एवं आत्मीय सम्बन्धों के बीच उपजी रसहीनता को इन्होंने अपना परिवेश बनाया है। इस प्रकार अनुभव के आधार लिखा गया साहित्य बहुत ही अधिक प्रभावशाली बन पडता है। अत: मैत्रेयी पुष्पा की 'ललमनियाँ ' और 'चिन्हार ' कहानी संग्रहोमें सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक वातावरण देखने का प्रयास किया है।

### 3.5.1 ग्रामांचल का परिवेश

**'बेटी'** कहानी में गांव का परिवेश संक्षिप्त रूप में सामने आता है। कहानी में गाँव के खेती का परिवेश रेखांकित है जैसे - ''जिस राह से मैं स्कूल भागी हुई जा रही होती

थी, उसी रास्ते पर मेरी अभिन्न सखी मुन्नी के खेत थे। वह वहीं अपने पिता के साथ खेतों में बुवाई कराती मिलती, कभी पानी लगा रही होती और कभी रहट हाँक रही होती।''[4] अत: प्रस्तुत कहानी में खेतों के चित्रों को अंकित किया गया है ग्रमांचल को उभारनेवाला खेती का परिवेश वातावरण को बढ़ावा देता है और वातावरण को विश्वसनीय बनाता है।

**'मन नाँहि दस-बीस'** कहानी में भी ग्रामांचल का परिवेश अंकित किया है, जैसे - ''रास्ते में सडक के दोनों ओर वृक्षों की सधन छाया ने सूरज की प्रचंड गरमी को अपने ऊपर झेल लिया था। गरमी की चटक सुबह दोपहर की सी आग उगलने में लगी थी।''[5] अत: मैत्रेयी पुष्पा ने प्रस्तुत कहानी में गाँव की जो पहले परिस्थिति देखने को मिलती वही आज भी दिखायी देती है। यही चित्रित करने का प्रयास किया है।

**'आक्षेप'** कहानी में गाँव के वातावरण का चित्रण अंकित है और मुख्यत: खेती व्यवसाय सामने आता है। आधुनिक काल में विकसित कृषि - व्यवस्था के रूप में इस कहानी का वातावरण उभर उठा है। जैसे ''मैं इस गाँव के लिए जी - तोड मेहनत कर रहा था - सारे - सारे दिन किसानों के साथ खेतों का निरीक्षण करता घूमता - कहीं फसल में कीडा तो नहीं लगा ? खाद समय पर डाली है कि नहीं ?एक -एक किसान से पूछता।ऋण दिलवाने के लिए भाग-दौड करता। उसकी परेशानियाँ सरकार तक पहुँचाने का भरसक प्रयत्न करता तथा नये तरीके से खेती करने के आयाम उनके सामने खोलकर रखता।''[6] अत: गाँव के परिवेश में खेती की जो हालत दिखाई देती है, वैसी ही हालत हमें आज भी देखने को मिलती है। जो आधुनिकता की ओर अग्रेसर होती अंकित होती है। खाद, सिंचाई, ऋण व्यवस्था आदि के रूप में वातावरण को उभारा है।

**'भँवर'** कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव में रहनेवाले एक परिवार का परिवेश अंकित किया है। एक ही परिवार में जब मजबूरी की बजह से एक ही पति की दो औरतों को एक-दूसरे का सामना करना होता है, उस समय उन्हें किन-किन हालातों से गुजरना पडता है

उसका वातावरण दृष्टिगोचर होता है - ''यही सिलसिला..... रोज का महासमर। रोज की बहसा-बहसी। नौबत मार-पिटाई तक पहुँचने लगी। दिन-भर संग्राम। रात को केशव की मार से उठा हडकम्प। बच्चें लढाई ठुकुर-ठुकुर देखते अपनी माँ से लिपट जाते। विरमा का पल्ला तो किसी बालक ने कभी भूले से भी नहीं पकड़ा। कैसे समझा दिया सुमन ने नन्हे छौनों को।''[7] अत: अशिक्षा के कारण ग्रामीण परिवेश में ऐसे झगडे सामने आते हैं। उसे मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में अंकित किया है।

**'सेंध'** कहानी में गाँव के गरीब लोगों को पैसों के अभाव का फायदा राजनीतिक लोग उठाते हैं और उन्हें फँसाते हैं आदि के रूप में परिवेश अंकित है - ''चार पैसे हाथ में ज्यादा आते हैं तो बरखत जरूरत दीन-गरीबों की मदद कर देती हैं। गाँववालों को और चाहिए भी क्या ? आड समय में कोई हथेली पर दो पैसे रख दे तो कृतकृत्य। गठरी-भरे अहसान तले दब जाते हैं। और बिना कहे - सुन चार रूपए सैकडे प्रतिमाह के हिसाब से ब्याज की रकम देहरी पर धर जाते हैं। जय-जयकार अलग।''[8] गाँव जीवन पर आधारित कहानियों का परिवेश उचित, यथार्थ और गाँव की सच्चाइयोंपर प्रकाश डालता है।

### 3.5.2 शहर का परिवेश

**'अपना - अपना आकाश'** कहानी में शहर का परिवेश अंकित है। प्रस्तुत कहानी में शहर की भीषण गर्मी, लोगों की भागदौड, कारों का धुओं दुषित वातावरण दिखाई देता है। इसके विरूध्द इस कहानी में गाँव की शांति, खेत-खलीहान की परिस्थीति है। कहानी का परिवेश मिश्र आंचलिक है। अत: मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव के जीवन के साथ-साथ शहरी जीवन का विरोधाभास स्पष्ट किया है।

**'कृतज्ञ'** कहानी में शहर का परिवेश अंकित है। प्रस्तुत कहानी में लोगों की भागदौड को रेखांकित किया गया है, जैसे - ''पाँव उसी ओर बढ गए। सड़क के किनारे खडी थी - आता जाता ट्रेफिक.....उफ ! कारों - बसों की सीधी साँप-सी कतार-वे-अन्त। दायें-

बायें देखकर सडक पार करती हुई वह अपनी रौ में चली जा रही थी - कि अस्पताल के बाहर पटरी पर निगाह बरबस ठहर गयी।''[9] अत: मैत्रेयी पुष्पा ने शहर की भागदौड को सामने रखकर वहाँ जीनेवाले लोगों की मानसिकता को अंकित किया है।

**'बोझ'** कहानी में शहरी परिवेश अंकित है। वर्तमान परिस्थिति में बच्चों के माता-पिता उन्हें क्रैश में डालते हैं। उसका यथार्थ अंकन किया है और वही परिवेश के रूप में दृष्टिगोचर होता है - '' क्रैश की आया कुछ न समझ पायी। मैडम अलग हैरान, यहाँ तो कोई गोलू नहीं।''

''आये, सोरी मैडम जी ! गोलू नहीं, परसान्त बाबा ! दइया, भुलाय जात है नाम ! मेम साहब ने कितनी बेर तो हमें याद करवाया।''

उस दिन से वह क्रैश में भी गोलू हो गया।''[10] अत: माता-पिता को बच्चों के अच्छे प्रवेश लेने का जादा प्रभाव दिखाई देता है। जो हमें आज भी दिखाई देता है।

### 3.5.3 पारिवारिक परिवेश

**'सहचर'** कहानी में गाँव के परिवेश के साथ-साथ मकान का परिवेश प्रस्तुत हुआ है, जैसे - ''सेवरे बंसी भइया खेतो पर जाते तो छबीली चौके में कलेऊ बनाती। दोपहर को बखर से लौटते तो नहाने का पानी धरती। धुले कपडे देती, खाना परोसती, सामने बैठे रहती। हँस-हँसकर बतियाती।भइया विभोर रहते। नशे में डूबें हुए से कहते, विरमा ने हमारे लाने खूब सिरजीं तुम, नातर कैसे जिन्दगी कटती ? हम तो ठहरे.....'' छबीली चुप कर देती, ऊँगली उनके होठों पर धरकर।और उनकी छाती से लग जाती।''[11] अत: प्रस्तुत कहानी में गाँव के लोगों में जो पति-पत्नी का प्रेम है वहीं यहाँ दर्शाया है। साथ ही इसमें खेतों का वर्णन अंशीत रूप में प्रस्तुत है और गाँव की परिस्थिति भी हमें अंशीत रूप में दृष्टिगोचर होती है। मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव की खेती के साथ एक परिवार का मेल दिखाया है जिसमें वह सफल हुई दिखायी देती है।

**'पगलागयी है भागवती।.....'** कहानी में गाँव के एक परिवार के शादी का माहौल परिवेश के रूप में अंकित है - ''भले ही करंट सिंचाई के लिए न मिले, देर-सबेरे मिले, पर ब्याह के समय तो कहकर रखना पडता है किसी प्रकार 'औसर' की शोभा बनी रहे। ब्याह के खर्च में से ही सौ-पचास काढकर ऑपरेटर के हाथ पै धर दो, पंगत जिंवा दो बस्स!''

सजावट भी कम नहीं करवाई जीजा ने! आतिशबाजी चले न चले, यह रंग-बिरंगे लट्टुओं पर थिरकती चमकनी-फुरहरी किसी अतिशबाजी से कम है क्या? चारों ओर अनार-से छूट रहे हैं - आँखों के सम्मुख बिखरते हुए चमकीले छींटे।''[12] अत: गाँव में शादी की तैयारियों के वातावरण का इतना यथातथ्य रूप में उजागर किया है कि उसका पूरा माहौल आँखों के सामने हुबहू दिखाई देता है।

**'तुम किसकी हो बिन्नी?'** कहानी पारिवारिक परिवेश के अंतर्गत आते है। कहानी में घरका वंश आगे चलाने के लिए लडका चाहिए, लडकी नहीं इस धारणा को लेकर चलने वाले समाज का परिवेश अंकित किया है - ''सामाजिक परिवेश कँटीला-सा हो चला। तीज-त्योहार चिढाते-बिराते-से निकलने लगे। कलेजे में हीनता की हूक-सी उठती, जो बेचारगी में पलट जाती। राखी हाथ में लिये बेटियाँ कैसी बेअर्थ लगतीं..... स्वत्वहीन, लाचार! संसार की किसी अमूल्य निधि से वंचित! दुर्लभ रिश्ते से कठी हुई।''[13] अत: लडकों की तुलना में लडकियों को समाज में निम्न प्रति के स्थान को दिखाने का प्रयास किया गया है जो आज भी देखने को मिलता है। लडका-लड़की को लेकर परिवार के वातावरण की एवं परिवेश की मानसिकता को यहाँ उभारा है।

### 3.5.4 राजनीतिक परिवेश

**'बहेलिये'** कहानी में राजनैतिक माहौल को अंकित किया है। जहाँ पर शांति नहीं दिखाई देती। निम्नवर्ग उच्चवर्ग के अत्याचार का विरोध करते दिखाई देते हैं, जैसे - ''कहाँ तक जुर्म सहें पुलिस के, गाँव के गुण्डों के, आप ही बताइए न! बस इतनी विनती सुन

लीजिए कि सूरज का तबादला इस थाने में..... मदद कीजिए।''[14] अत: प्रस्तुत कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव के लोगों की अत्याचार के विरूध्द आवाज उठाने की मानसिकता को परिवेश के रूप में उभारा है।

**' फैसला '** कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने वर्तमान ग्रामीण राजनीति क्षेत्र में उभरती हुअी भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति नारी के विद्रोही रूप का यथार्थ अंकन किया है जो परिवेश के रूप में सामने आता है। ग्रामीण परिवेश में स्थित राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा व्यवस्था की अमानवीयता को लेखिकाने प्रस्तुत कहानी की नायिका बसुमती संघर्षशील तथा विवेकशीलता द्वारा ग्रामीण स्त्रियों के अधिकारों को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। जो नारी नवचेतना का परिचायक है। इस कहानी में ग्रामीण परिवेश की चेतित नारियाँ, ग्रामीण षड्यंत्री अन्यायी राजनीति आदि को परिवेशानुकूल ढाला है और वातावारण में उभार लाया गया है।

### 3.5.5 आतंक का परिवेश

**'हवा बदल चुकी है'** कहानी में आतंक के वातावारण को चित्रित किया गया है जो आधुनिक काल में मनुष्य के जीवन को लगा हुआ अभिशाप है - ''पाकिस्तान बनने पर हिन्दू-मुस्लिम दंगों की मारकाट में सुजान आहत मन इधर-उधर भागे फिरे थे। गाँव के गरीब मुसलमान अपनी घर मडइया छोडकर कहाँ पाकिस्थान में बसने जाते..... वे तो बिलखकर रो उठे - ''क्या करें, बचा लो सुजान भैया।''[15] अत: जातीयता के आतंक को हमें आज भी समाज में रहनेवाले इनसान को भुगतना पडता है। यही यहाँ पर अंकित है।

**'छाँह'** कहानी में दंगा के वातावारण को चित्रित किया है जो आधुनिक काल में भी जातीयता के कारण दिखाई देता है - ''अचानक एक ओर से बवंडर की तरह शोर मचा, फि र हाहाकार-चींखे, चिंधाड..... देखते ही देखते तूफान वहाँ तक बढ़ आया जहाँ वे दोनों बैठे थे, ये सारे लोग भाग क्यों रहे हैं? कौन चीख रहा हैं ? समवेत स्वर में किसकी चिंधाडे ?

SHIVAJI UNIVERSITY

झटपट दुकानें बन्द होने लगीं, खटाखट दुकानों के शटर गिरने लगे, ''जल्दी करो, भागो ! भागो।'' लोग बदहवास हुए दौड़ने लगे। कौन कुचल गया ? कौन पिच रहा है, किसी को खबर नहीं ! अन्तहीन वे-लक्ष्य दौड़।

वे दोनों उजबक से देखते रहे। दुकानदार चीखा, ''देख नहीं रहे ? भागो जल्दी ! दंगा हो गया।''[16] अत: इस प्रकार के आतंक आज शहर में या गाँव के रहनेवाले हर इन्सान को भुगतना पड़ता है। आतंक का दबावी परिवेश, दंगे की पार्श्वभूमि इस कहानी में परिवेश के रूप में उभर उठी है।''

### 3.5.6 अस्पताल का परिवेश

**'सिस्टर'** कहानीमें डोरोथी डिसूजा अस्पताल में नर्स होने के कारण सिस्टर का परिवेश सामने उभरकर आता है - ''सफेद ऐप्रिन पहना। क्लिप से बालों में टोपी लगाई पलंग पर बैठकर पाँवों में मोजे पहनने लगी। फ्लीट्स पहनकर तिपाई से अपनी स्टील की चेनवाली मरदानी घडी उठाकर हाथ में बाँध ली। सिस्टर डिसूजा अपना बैग सँभालती हुई सडक पर खडे रिक्शे में आ बैठीं। बैग को एक बार सावधानी पूर्वक फिर से देखा, कहीं इंजेक्शन की सिरिंज, स्पिरिट वगैरह में से कुछ भूल तो नहीं आयीं। ''[17] अत: मैत्रेयी पुष्पा ने एक सिस्टर का यथातथ्य रूप में चित्रित किया है कि वास्तविकता में भी इसी रूप में अंकित होता है।

**'रिजक'** कहानी में प्रसुति नर्स और प्रसुति नारी का परिवेश मैत्रेयी पुष्पा ने अंकित किया है, जैसे -'' पानी खौलाओ पतलेई में, खिडकी-दरवाजा खुला रखो। भीड-मीड नहीं। टिटनस का इंगेसन लगवाया ? बैठकर बच्चा नहीं होगा, जच्चा को खटिया पर लिटा दो।''[18] अत: मैत्रेयी पुष्पा ने यहाँ पर एक प्रसुति नारी का यथातथ्य रूप में चित्रित किया है की वास्तविकता में भी इसी रूप में अंकित होता है।

### 3.5.7 मकान का परिवेश

**'सफर के बीच'** कहानी में मकान का परिवेश सामने आता है - ''किलकते घरौदे में बियाबानी भाँय-भाँय करता संत्रास पसर गया। चूल्हा, तवा, थाली, आटा सब आपस में अपरिचित हो उठे, जैसे इस घर के चूल्हे-बरोसी से कभी धुआँ उठा ही न हो, साग-तरकारी की छौंका-भूँजी हुई न हो।''[19] अत: हमें बिना गृहिणी के घर में जो हालात होते हैं वही दृष्टिगोचर होते है। साथही मकान के बाहर का परिवेश अंकित है, ''धूप छप्पर से नीचे उतर गयी। चबूतरे पर उगी नन्हीं नीवरी की छाया लम्बी होकर ओसारे तक आ गयी थीं - साँझ उतरने का आभास हो चला।''[20] अत: मैत्रेयी पुष्पा ने एक ही मकान के बाह्य और अंदर के परिवेश को अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित किया है कि, आँखों के सामने पूरा मौहोल हुबहू चित्रित होता है।

### 3.5.8 सांस्कृतिक परिवेश

**'केतकी'** कहानी में नयी दुल्हन गाँव में पदार्पण करती है, उस माहौल को अंकित करते हुए मैत्रेयी पुष्पा लिखती हैं - ''ब्रजभूमि के जिस कोने में जमुना बहती है उसी ओर करील कुंजों की ओर मेरा गाँव मधुपुर बसा हुआ है। केतकी वहीं ब्याहकर उसी गाँव आयी थी - ट्रैक्टर की ट्राली में बिछे मखमली पतले कालीन पर, मुख पर लम्बा अवगुण्डन डाले सिर झुकाए बैठी थी। ट्रैक्टर के आसपास बच्चे मँडरा रहे थे।''[21] अत: लेखिकाने यहाँ पारम्पारिक रूढ़ी परम्पराओं को दिखोकर उन्हें निभाने का प्रयास किया है। साथ ही एक अनोखे वातावरण को कहानी में उजागर करने की कोशिश की है।

**'ललमनियाँ '** कहानी में शुभ शकुनों के वक्त बिरज भूमि में जिस नाच को दिखाया जाता है, उस नाच का परिवेश अंकित है। समय के साथ उस गीत का मुखडा बदल गया है, लेकिन नाच वही रह गया है, ऐसा दिखाई देता है -

''सफेद कमीज वारे ..... तू देख ललमनियाँ

ओ लाली पेंट वारे तू देख.....''[22] अत: मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी पुरानी संस्कृति को आज भी पूजने वाले लोगों को उजागर करने का प्रयास किया है।

### 3.5.9 कॉलेज का परिवेश

**'चिन्हार'** कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने कॉलेज में प्रवेश लेने के वातावारण को अत्यंत सुंदर ढंग से चित्रित किया है जैसे - ''जुलाई के महीने में शहरों के कॉलेजों में प्रवेश पाने वाले छात्र-छात्राओं की बाढ़-सी आ आती है। उस वर्ष भी कुछ' ऐसा ही हुआ था। हम अपने कस्बे से इण्टर की परीक्षा पास करके झाँसी के डिग्री कॉलेज में प्रवेश ले चुके थे - मैं और मेरे दो चचेरे भाई।''[23] अत: कॉलेज के वातावरण को इतना यथातथ्य रूप में अंकित किया है कि उसका पूरा माहौल ही हमारे सामने आ जाता है।

**'अब फूल नहीं खिलते.....'** कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने कॉलेज के हरताल में जो शांतिपूर्ण परिस्थिति होती है वही यहाँ पर अंकित है, जैसे - ''छतवाला साइंसरूम दीख पड़ा। आसपास खपरैल छबे कमरे। बीच ग्राउंड में वे ही झूले जिन पर इण्टरवेल में छोटी कक्षाओं के बच्चे लदे रहते थे। कमरों में ताले पडे हुए थे। उनकी आँखों में फिर भी कमरों के अन्दरूनी नक्शे उभर आये। वे आँखे मूँदकर बता सकते थे कि किस कमरे के भीतर क्या होगा। कुर्सियाँ कैसी रखी होंगी, मेज किधर को पडी होंगी और ब्लैंक बोर्ड किस दिशा में होगा।''[24] अत: कॉलेज के हडताल का इतना यथातथ्य रूप में वर्णन किया है कि, कॉलेज का शांतिपूर्ण परिवेश हमारे आँखों के सामने उभरकर आता है की वास्तविकता में भी हडताल के वक्त ऐसा ही माहौल उजागर होता है।

**निष्कर्ष**

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि मानवीय धरातल को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करनेवाली, अपने अनुभवों को शब्दरूप देनेवाली, मानवीय रिश्तों की पहचान करानेवाली कहानियाँ लिखनेवाली मैत्रेयी पुष्पा एक कहानीकार के रूप में सामने आती है। अपने जीवन

में आये अनुभवों से प्रेरणा प्राप्त कर उन्होंने उसे साकार रूप दिया है। इसी कारण इनकी कहानियाँ प्रभावशाली बन गयी है । मैत्रेयी पुष्पा की आलोच्च कहानियों में ग्रामीण, मध्यवर्गीय और पारिवारिक परिवेश को अंकित किया गया है। जादातर ग्रामीण परिवेश को अंकित किया है। शहरी जीवन के आतंक पूर्ण माहौल को कम मात्रा में अंकित किया है। जैसा परिवेश वैसी भाषा का प्रयोग मैत्रेयी पुष्पा जी की कहानियों में अंकित किया है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा हर संवेदनशील साहित्यकार की तरह अपने परिवेश, अपनी परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपने अनुभव पर आधृत रचनाओं की सृष्टि करती है। यहीं उनके परिवेश चित्रण की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

संक्षेप में मैत्रेयी पुष्पा की आलोच्च कहानियों में ग्रामांचलों का, शहर का, अस्पताल का, कॉलेज का, आंतक का, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक, मकान के अंतरिक बाह्य परिवेश का हुबहू चित्रण परिवेश के रूप में लेखिका ने प्रस्तुत किया है। कहानीकार मैत्रेयी द्वारा चित्रित किया गया यह परिवेश उसकी अनुभूति और संवेदना का परिचायक लगता है। मैत्रेयीने अपने जीवन में जो गाँव जीवन को और शहरी जीवन को देखा, परखा और अनुभव किया है, उसका यथार्थ चित्रण अपनी कहानियों में उन्होने चित्रित किया है।

यह परिवेश जिंदा बनकर कहानियों को गतिशील और प्रभावी बनाता है। संक्षेप में परिवेशानुकूल वातावरण को चित्रित कर ने में मैत्रेयी ने सफलता प्राप्त की है। उनकी कहानियों में परिवेश का यथार्थ रूप उभर उठा है।

# संदर्भ ग्रंथ – सूची


1. राहुल भारद्वाज - नवें दशक की हिन्दी कहानी में मूल्य-विघटन - पृ. 37
2. हेतु भारद्वाज - परिवेश की चुनौतियाँ और साहित्य - पृ. 10
3. परमानन्द श्रीवास्तव - कहानी रचना-प्रक्रिया और स्वरूप - पृ. 56
4. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 20
5. वही पृ. 49
6. वही पृ.76
7. वही - पृ. 106
8. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 42
9. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 90
10. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 85
11. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 29
12. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 98
13. वही पृ. 122
14. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 45
15. वही - पृ. 66
16. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 111
17. वही - पृ. 34
18. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 75
19. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 112

20. वही - पृ. 111

21. वही - पृ. 123

22. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 146

23. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 135

24. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 50